शब्द महिमा

डॉ कंचन जैन "स्वर्णा"

कभी-कभी शब्द भी खो जाते हैं,
शब्दों की भीड़ में।
सूख जाता है शब्दों का सागर,
एक-एक बूंद चक्षुओं से बहते नीर में।
शब्दों के संसार में सभी अपने पराए,
और शब्द ही खो जाते हैं, अपनों में।
शब्दों के दर्पण में निहारता है अस्तित्व,
और फिर खो जाता है शब्दों की तृष्णा में।
शब्द ही शीरीनी, और शब्द ही कटुक,
चुभते हैं, जब शब्द हृदय में।
शब्दों की विनम्रता और भावना ही,
उतर जाती है, शब्दों के कोमल हृदय में।
शब्द ही तेरे भविष्य का दर्पण,
शब्द ही तेरा भूत भविष्य और वर्तमान है।
शब्दों से ही तेरा जीवन,
और तेरे शब्दों की हार,
ही तेरी मृत्यु समान है।